नासिरा शर्मा का कथासाहित्य में योगदान

कु० रूबी जमाल (शोधार्थी)
गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (हरिद्वार)
प्रो० सुचित्रा मलिक (शोध निर्देशिका)
गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (हरिद्वार)

किसी साहित्यकार के साहित्य में उसका व्यक्तित्व विशेष अवश्य समाहित रहता है। अतएव प्रत्येक साहित्यकार का कृतित्व उसके व्यक्तित्व के अनुरूप एक अलग विशेषता और महत्व लिए हुए रहता है।

नासिरा शर्मा एक दबंग व्यक्तित्व की स्वामिनी हैं। उन्होने जिस निड़रता और साहस से भारतीय परिवेश में व्याप्त समस्याओं को अपने लेखन का मुद्दा बनाया उसी साहसिकता और निडरता से देश की सीमा पार कर मध्य पूर्व देशों (खाड़ी देशों–ईरान, इराक, दुबई इत्यादि) में व्याप्त समाज की समस्याओं व आमजन के दु:ख–दर्द पर निरन्तर लिखती आयी हैं।

व्यक्तित्व

जीवन परिचय

हिन्दी साहित्य जगत की सशक्त हस्ताक्षर नासिरा शर्मा का जन्म विश्वप्रसिद्ध साहित्यिक, सांस्कृतिक व ऐतिहासिक नगरी इलाहाबाद (उत्तरप्रदेश) में एक शिया–सय्यद सुशिक्षित, सम्पन्न घराने में स्वतन्त्रता प्राप्ति के एक वर्ष पश्चात् २२ अगस्त सन् १९४८ ई० में हुआ था। नासिरा शर्मा के पैतृक गांव के सम्बन्ध में डा० ललित शुक्ल 'शब्द और संवेदना की मनोभूमि : नासिरा शर्मा में लिखते हैं – ''अवध का एक जिला रायबरेली भी है। यहीं का एक बडा गांव मुस्तफाबाद है। यही गांव नासिरा शर्मा का मूल स्थान है।''[१]

इस प्रकार लेखिका गांव और शहर दोनो से सम्बन्ध रखती हैं।

नासिरा शर्मा की माता का नाम नाज़नीन बेग़म और पिता का नाम प्रोफेसर जामिन अली था। इनके पिता इलाहाबाद विश्वविद्यालय में उर्दू विभागाध्यक्ष थे। नासिरा शर्मा के दोनों भाई और बहनें भी साहित्य जगत से जुडे हुए हैं। इनकी एक बहन मशहूर शायरा भी रह चुकी हैं।

पारिवारिक वातावरण एवं परिवेश

नासिरा शर्मा ने एक सर्वगुण सम्पन्न, संस्कारी एवं प्रतिष्ठित घराने में आंखें खोलीं। वहीं से उनकी बहुमुखी प्रतिभा को निखरने का अवसर प्राप्त हुआ। आरम्भ से ही इनके परिवार की परंपरा लिखने–पढ़ने की रही है। इनके घर में प्रत्येक माह आयोजित होने वाले मुशायरे में लगभग सम्पूर्ण भारतवर्ष के प्रसिद्ध शायर सम्मिलित होने के लिए आया करते थे। इनके परिवार में अदब व तहज़ीब कूट–कूटकर भरी हुई थी। यहां तक कि घर में काम करने वाले नौकरों से जब बातचीत की जाती थी तो अदब व तमीज़ का बडा ख्याल रखा जाता था।

शिक्षा एवं व्यवसाय

नासिरा शर्मा की प्राथमिक शिक्षा 'सेन्ट आनथोनी कान्वेन्ट' से हुई। किन्तु दुर्भाग्यवश पिता की मृत्यु के पश्चात् इनकी मां ने सुरक्षा की दृष्टि से तीनों बहनों को 'हमीदिया गर्ल्स कॉलेज' में दाखिला दिलवाया। वहीं से लेखिका ने अपनी इण्टरमीडिएट तक की पढ़ाई की। इसके पश्चात् इन्होंने सन् १९६७ ई० में स्नातक स्तर तक की शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की और सन् १९७६ ई० में दिल्ली जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से अंग्रेजी, हिन्दी, पश्तो, उर्दू, फारसी आदि भाषाओं का अध्ययन किया।

नासिरा शर्मा के जीवन में उनके फारसी के उस्ताद खुसरू कसरवी का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। उनके बारे में नासिरा शर्मा लिखती हैं – ''उनका योगदान मेरे जीवन में गहरा है यदि वह फारसी का उच्चारण सही न सिखाते न

पर्तदार फारसी का मुहावरा समझाते तो मैं नए ईरान पर काम नहीं कर सकती थी।''[२]

नासिरा शर्मा फारसी भाषा में पी–एच०डी० करना चाहती थीं। परन्तु उनके खिलाफ़ अनेक षड्यन्त्र रचे गए ताकि उन्हें पी–एच०डी० में दाखिला न मिल पाए। नासिरा बताती हैं – ''टीचर्स ने मुझे फारसी रिटिन में और फारसी मौखिक में बहुत कम नम्बर दिए थे। ये कहा था कि इन्हें न फारसी लिखना आता है, न बोलना। ये क्या पी–एच०डी० करेंगी।''[३]

इसके पश्चात् नासिरा शर्मा ने सन् १९८० ई० से सन् १९८३ ई० तक दिल्ली में जामिया मीलिया विश्वविद्यालय में उर्दू और फारसी भाषा का अध्यापन कार्य किया। वर्तमान में लेखिका कोई नौकरी नहीं कर रही हैं। वे अपने घर पर रहकर ही अपने लेखन कार्य को आगे बढा रही हैं।

विवाह एवं संतति

नासिरा शर्मा का विवाह मात्र अट्ठारह वर्ष की आयु में स्वयं से सोलह वर्ष बडे ब्राह्मण परिवार के सुपुत्र प्रो० रामचन्द्र शर्मा से स्पेशल मैरिज एक्ट के अनुसार हुआ।

प्रो० रामचन्द्र शर्मा से विवाह के बन्धन में बंध जाने के एक वर्ष पश्चात् उन्होंने एक बेटी को जन्म दिया, जिसका नाम उन्होंने अंजुम रखा। अंजुम के जन्म के एक वर्ष पश्चात् उन्होंने दूसरी संतान के रूप में एक बेटे को जन्म दिया, जिसका नाम अनिल शर्मा है। अनिल शर्मा का दूसरा नाम असगर अली है। उनका यह नाम उनकी नानी ने रखा था।

कृतित्व

नासिरा शर्मा ने अनेक उपन्यास और कहानी–संग्रह लिखे हैं, जो इस प्रकार हैं –

उपन्यास

१.शाल्मली

'शाल्मली' उपन्यास किताबघर प्रकाशन द्वारा प्रथम बार सन् १९८७ ई० में प्रकाशित हुआ भारतीय पृष्ठभूमि पर विरचित लेखिका का पहला उपन्यास है। इस उपन्यास में स्त्री–पुरूष के माध्यम से पुरूष द्वारा स्त्री पर अपना पूर्ण वर्चस्व स्थापित करने और स्त्री द्वारा इस वर्चस्व को पूर्णतया नकारने की साहसपूर्ण कथा प्रस्तुत की गयी है।

२.ठीकरे की मंगनी

'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास पहली बार सन् १९८९ ई० में किताबघर प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हुआ था। यह उपन्यास एक मुस्लिम परम्परावादी परिवार को केन्द्र में रखकर रचा गया है।

'ठीकरे की मंगनी' में यह बात निकलकर सामने आती है कि स्त्री चाहे वह किसी भी धर्म–सम्प्रदाय, जाति आदि की हो उसके मन में सदैव एक ही इच्छा रहती है। स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने की उत्कट अभिलाषा। अत: वह एक ऐसे घर की कामना करती है जहां पर उसकी अस्मिता और अस्तित्व को एक नई पहचान, नए आयाम मिल सकें।

३.ज़िन्दा मुहावरे

'ज़िन्दा मुहावरे' उपन्यास सन् १९९२ ई० में प्रकाशित हुआ था। यह उपन्यास भारत विभाजन को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। इसमें लेखिका ने इस विभाजन से उत्पन्न अनेक समस्याओं को उठाया है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने विभाजन से पूर्व और बाद के पैंतालिस वर्षों की परिस्थितियों को उकेरा है।

४.अक्षयवट

'अक्षयवट' उपन्यास सर्वप्रथम सन् २००३ ई० में भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित हुआ था। इसमें इलाहाबाद अपनी सभी विशेषताओं के साथ जीवन्त हो उठा है।

लेखिका ने 'अक्षयवट' में इलाहाबाद के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पहलुओं को प्रकट किया है। उन्होने हिन्दु–मुस्लिम त्यौहारों, व्रतों, रीति–रिवाजों, रहन–सहन, खान–पान, मनोरंजन आदि का बडा ही विशद् वर्णन किया है।

इसके अतिरिक्त लेखिका ने समाज में व्याप्त अराजकता, गुण्डागर्दी, हत्या, बलात्कार, अपहरण, चोरी, साम्प्रदायिक दंगे आदि समस्याओं का मुद्दा भी उठाया है।

५.कुइयाँजान

'कुइयाँजान' उपन्यास सन् २००५ ई० में पहली बार सामयिक प्रकाशन से प्रकाशित पानी की समस्या पर आधारित है। यह उपन्यास इस तथ्य की ओर इंगित करता है कि पानी के अभाव में इंसानी रिश्ते और सम्बन्ध किस प्रकार बदल जाते हैं। इस समस्या को लेकर दो व्यक्तियों,

दो राज्यों और दो राष्ट्रों के बीच तनाव की स्थिति उत्पन्न होने लगती है। भारत जैसे देश में जहां गंगा, यमुना, सरस्वती जैसी पवित्र नदियां प्रवाहित होती रही हैं औद्योगीकरण के कारण उनका जल भी दूषित होता जा रहा है। नदियों का देश भारत आज जल के दूषित हो जाने पर पानी के संकट से जूझ रहा है। लेखिका ने इसी समस्या को अपने उपन्यास में प्रस्तुत किया है।

६.ज़ीरो रोड

'ज़ीरो रोड' उपन्यास सन् २००८ ई० में भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास का कथाफलक अत्यन्त विस्तृत है। इस उपन्यास का आरम्भ दुबई जैसे अत्याधुनिक और व्यापारिक नगर से होता है परन्तु इसके सूत्र सांस्कृतिक और एतिहासिक दृष्टि से सम्पन्न इलाहाबाद शहर से जुडे हैं।

लेखिका ने अपने इस उपन्यास में विश्वपटल पर खडे भिन्न–भिन्न राष्ट्र, भाषा, धर्म, रंग के लोगों के दु:ख–दर्द की दास्तां को समझकर, उसका अनुभव कर लेखनीबद्ध किया है जो किसी एक व्यक्ति का सच न होकर सम्पूर्ण मानवता का सच है।

७.बहिश्ते ज़हरा

'बहिश्ते ज़हरा' उपन्यास (पूर्व नाम – सात नदियां एक समन्दर सन् १९८४ ई०) वाणी प्रकाशन द्वारा प्रथम बार सन् २००९ ई० में प्रकाशित हुआ था। यह उपन्यास ईरान की ख़ूनी क्रान्ति पर आधारित है। यह उपन्यास ईरानवासियों के सत्ता के विरूद्ध विद्रोह, भिन्न–भिन्न मतों वाले सियासी गुटों, जनसाधारण पर होने वाले अत्याचारों, शोषण तथा कारावास में दी जाने वाली भयानक यातनाओं का सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है।

८.पारिजात

'पारिजात' उपन्यास किताबघर प्रकाशन द्वारा प्रथम बार सन् २०११ ई० में प्रकाशित हुआ था। यह उपन्यास यथार्थ के धरातल पर लिखा गया नए–पुराने संबंधों का एक दस्तावेज है। इस उपन्यास के पात्र कभी अपने इतिहास की तलाश में निकल खड़े होते हैं तो कभी अपने भूत और वर्तमान में विचरते नजर आते हैं। इस उपन्यास में लेखिका ने इलाहाबाद और पुराने लखनऊ की सांस्कृतिक फिज़ा को उभारा है।

९.अजनबी जज़ीरा

'अजनबी जज़ीरा' सन् २०१२ ई० में लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद से प्रकाशित उपन्यास है। इस उपन्यास में नासिरा शर्मा ने अमेरिका द्वारा इराक पर किए गए आक्रमण और उससे उत्पन्न समस्याओं को बडे ही मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया है। यह उपन्यास इराक की क्षत–विक्षत हालत को बयान करता, एक दूसरे मुल्क द्वारा नजरबंद किए जाने की व्यथा को प्रकट करता विमर्श के सभी आयामों को छूता प्रतीत होता है।

१०.काग़ज़ की नाव

'काग़ज़ की नाव' उपन्यास किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली से सन् २०१४ ई० में प्रथम बार प्रकाशित हुआ था। यह नासिरा शर्मा की एक अनुपम एवं नवीन कृति है। यह बिहार की पृष्ठभूमि पर रचित ऐसे परिवारों की कथा का वर्णन करता है जिनके अधिकांश पुरूष जीविकार्जन के लिए खाड़ी देशों की ओर निकल जाते हैं और अपने पीछे छोड़ जाते हैं अपना परिवार।

इसके अलावा लेखिक ने बिहारी समाज में व्याप्त टोना–टोटका, परपुरूष गमन, पारिवारिक कलह, आत्महत्या, दहेज प्रथा, स्वार्थी नाते–रिश्तेदारी, धोखाधड़ी, जातिगत भेद, नारी के प्रति विषम दृष्टिकोण आदि विसंगतियों को 'काग़ज़ की नाव' उपन्यास में उजागर किया है।

कहानी–संग्रह

१.शामी काग़ज़

'शामी काग़ज़' कहानी संग्रह सन् १९८० ई० में प्रकाशित हुआ था। यह नासिरा शर्मा का प्रथम कहानी संग्रह है। यह संग्रह नासिरा शर्मा की ईरानी यात्राओं का दस्तावेज है। इसमें ईरानी व्यवस्था पर आधारित सोलह कहानियां संग्रहित हैं। इन कहानियों का एकमात्र उद्देश्य नारी की रक्षा, उसको सम्मान और गरिमा प्रदान करना तथा इस धरती पर मानवता को जीवित रखना है।

२.पत्थर गली

'पत्थर गली' कहानी संग्रह सन् १९८६ ई० में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ था। इस कहानी संकलन में आठ कहानियां संकलित हैं। इस संकलन की सभी कहानियां रूढ़िवादी मुस्लिम समाज का प्रतिनिधित्व करती हैं। इन कहानियों में मुस्लिम समाज में स्त्रियों की

घुटन भरी जिन्दगी और इस घुटन भरे माहौल से स्वतन्त्र होने की उत्कट आकांक्षा का चित्रण मिलता है।

३.संगसार

इस कहानी संग्रह में सन् १९८० से सन् १९९२ ई० तक की कहानियां संग्रहित हैं। इस संग्रह में अट्ठारह कहानियां और एक कविता 'तुम्हारे बिना' संग्रहित हैं। ये कहानियां वैसे तो ईरानी पृष्ठभूमि पर आधारित हैं। परन्तु इन्हे पढ़कर ऐसा अनुभव होता है कि ये हमारे ही परिवेश में घटित घटनाओं को प्रस्तुत करती हैं।

४.इब्ने मरियम

'इब्ने मरियम' नासिरा शर्मा की तेरह कहानियों का संकलन है। यह किताबघर प्रकाशन से सन् १९९४ ई० में प्रकाशित हुआ था। इस संग्रह की प्रत्येक कहानी संघर्षशील आदमी की कहानी है। स्वयं लेखिका के शब्दो में – ''जिसमें फंसा इंसान जीने के लिए छटपटाता है, कभी उसका यह संघर्ष अपने अधिकार को पाने के लिए होता है तो कभी समाज को बेहतर बनाने के लिए करता है।''[४]

५.सबीना के चालीस चोर

'सबीना के चालीस चोर' कहानी संग्रह सन् १९९७ ई० में प्रकाशित बारह कहानियों का एक संग्रह है। इस संग्रह की कहानियां स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् के भारतीय समाज पर आधारित हैं। इन कहानियों के सम्बन्ध में नासिरा शर्मा लिखती हैं – ''ये कहानियां उन इन्सानों की हैं जो बचपन से मेरे साथ हैं। जिन्होने मुझे कहीं न कहीं प्रभावित किया। अपनी जिन्दगी से मेरा रिश्ता जोडा और मुझे ताजा अनुभूतियों से भरी दुनिया व अलग संसार दिया।''[५]

६.खुदा की वापसी

'खुदा की वापसी' कहानी संग्रह भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन से सन् १९९८ ई० में प्रकाशित हुआ नौ कहानियों का संग्रह है। ये कहानियां उन शोषित मुस्लिम स्त्रियों की हैं जो अपने जीवन को अपनी इच्छानुसार जीना चाहती हैं। परन्तु धर्म और शरीयत के नाम पर उनके ऊपर की जाने वाली हद से ज्यादा रोक–टोक उनको एक लाचारी और बेबसी भरी जिन्दगी जीने के लिए बाध्य कर देती है।

७.इन्सानी नस्ल

'इन्सानी नस्ल' कहानी संग्रह प्रथम बार सन् २००१ ई० में प्रतिभा प्रतिष्ठान प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ था। यह तेरह कहानियों का संकलन है। इसमें नासिरा शर्मा ने भारत में विद्यमान विभिन्नताओं को एकता के सूत्र में पिरोकर अनेकता में एकता को प्रस्तुत किया है।

८.दूसरा ताजमहल

सन् २००२ ई० में इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित 'दूसरा ताजमहल' कहानी संग्रह में नासिरा शर्मा की सात कहानियां संग्रहित हैं। इस संग्रह की सभी कहानियां एक दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं, इन कहानियों का रंग अलग–अलग है, ये कहानियां साथ रहते हुए भी अपना–अपना अस्तित्व रखती हैं।

९.बुतखाना

लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली से सन् २००५ ई० में प्रकाशित 'बुतखाना' कहानी संग्रह में उनत्तीस कहानियां और बारह लोककथाएं संग्रहित हैं। इस संग्रह की कहानियां समाज की सच्चाईयों को प्रकट करती हुई यथार्थ के धरातल पर खड़ी दिखाई पड़ती हैं। इन कहानियों के विषय ऐसे हैं जिसमें वर्तमान पीढ़ी अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए संघर्षरत् है।

उपरोक्त विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि नासिरा शर्मा का कथासाहित्य का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। उन्होने देश–विदेश में व्याप्त समस्याओं को अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से प्रकट किया है और अपनी रचनाओं के माध्यम से इन समस्याओं के समाधान हेतु भरसक प्रयास भी किए हैं। इस प्रकार नासिरा शर्मा का हिन्दी कथा साहित्य में अतुलनीय योगदान है।

संदर्भ –

१.सम्पादक ललित शुक्ल, नासिरा शर्मा : शब्द और संवेदना की मनोभूमि, पृ०सं० ७
२.नासिरा शर्मा, जहां फौव्वारे लहु रोते है, पृ०सं० ११
३.प्रेम कुमार, जने अजीब : नासिरा शर्मा, पृ०सं० १८८
४.नासिरा शर्मा, इब्ने मरियम, दो शब्द
५.नासिरा शर्मा, सबीना के चालीस चोर, दो शब्द